Training on

Awareness Generation on Technologies developed by Forest Research Institute, Dehradun under the sponsorship of MoEF & CC, New Delhi

[24th to 26th October, 2017]

Innovations in Forestry Sector are integral part of development on national and Global level, if disseminated to a common man. These technologies may make true the dream of make in India and success the concept of skill development in a real sense.

The Forest Research Institute, Dehradun developed several technologies which can make a common man self dependent by their adoption. An opportunity to different category of rural and urban people may be provided for livelihood improvement by disseminating these developed technologies.

Keeping in view, the Extension Division of the institute conducted three days training programme on Awareness Generation of technologies developed by FRI from 24th to 26th October, 2017 at the Institute in which 35 participants including farmers, NGOs, Self Help Groups, students and representative of the industries participated.

The training was inaugurated by Dr. Savita, Director of the institute on 24th October, 2017. In her inaugural address Dr. Savita stated that the institute has developed many technologies which may be adopted by farmers in the form of agroforestry for their livelihood improvement and other stakeholders including cottage industries may also take benefit of these technologies. She told these all technologies are ecofriendly and cost effective as well. Dr. A. K. Pandey, Head extension Division welcomed the participants and gave bried outline of the training progarmme. He said that the aim of the training progarmme is to disseminate FRI technologies to the stakeholders. He further mentioned that any help in adoption of technologies required by participants will possibly be done by the team of

Extension Division. The Director of the institute, Dr. Savita in her address said that the institute is already in service of common people and anybody can interact with our team through our Vaniki Sahayata Kendra (Forestry Helpline) and get a solution of forestry related problems. Participants appreciated the training very much and said that such more programmes should be organized by the institute from time to time. They said that they would make a regular interaction and take technical guidance of scientists of the institute in adoption of technologies disseminated to them.

During the technical sessions, participants interacted with scientists of the institute on technical aspects of different technologies like, Herbal Gulal preparation, natural dye from plants biomass, seasoning of timber, board making from Lantana weed, cultivation and sustainable harvesting of medicinal plants, seed and nursery technology, Samridhi- a process for obtaining photoecdysteroids from weeds for Silkworm, composting from waste plant biomass, cultivation of medicinal and edible mushrooms, agroforestry modeling etc.

All members of the team including Dr. Charan Singh, Scientist-E, Dr. Devendra Kumar, Scientist-D, Shri Rambir Singh, Scientist-D, Shri Ajay Gulati Sr. Technical Officer, Shri P. K. Gupta, Scientist (Rtd.), Shri Vijay Kumar, ACF, Shri Ramesh Singh Head Clerk Shri Sachin, Forest Guard remain actively involved in all managerial activities during the training.

Glimpses of the event

Welcome of Dr. Savita, Director, FRI and Chief Guest

Director, FRI addressing participants

Interaction with participants

Subject expert delivering a talk

Subject expert interacting with participants

A participant expressing his success story

A participant receiving certificate from the Director, FRI

Faculty and participants altogether

Media coverage

राष्ट्रीय सहारा
25 अक्टूबर, 2017

एफआरआई की तकनीकियां किसान अपनाएं

एफआरआई में चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते विशेषज्ञ।

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां जागरूक किसानों, स्वयं सहायता समूहों और अन्य हितग्राहियों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए आवश्यक है। इसके लिए किसानों को कृषि वानिकी तथा वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित तौर तरीकों को अपनाने की आवश्यकता है। एफआरआई में तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण में यह बात कही गई।

वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां पर जागरूकता के लिए मंगलवार से 26 अक्टूबर तक तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। यह कार्यक्रम पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के सहयोग से किया जा रहा हैं जिसमें उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के किसान, गैर सरकारी संगठन, तथा अन्य हितग्राहियों के लगभग 34 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान की निदेशक डा. सविता ने किया। उन्होंने कहा कि उपरोक्त राज्यों में कृषि वानिकी पद्धति को स्थापित करने की काफी जरूरत है। संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों को अपने प्रयोगशाला से जमीनी स्तर तक पहुचाने की आवश्यकता है। वन अनुसंधान संस्थान में न काष्ठ से पेपर बनाना तथा बांस के विभिन्न उत्पाद तैय करना एवं इमारती लकड़ियों का वैज्ञानि तरीके से संशोधन कर उनके स्थायित्व व बढ़ाने की विभिन्न तकनीक मौजूद हैं अं किसान इसका फायदा उठा सकते हैं। प्रमु विस्तार विभाग डा. एके पाण्डेय ने व अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकि पर उपरोक्त राज्यों में जागरूकता बढ़ाने लिए जोर दिया तथा आशा व्यक्त की कि स प्रतिभागी किसान इस प्रशिक्षण से लाभान्वित होंगे। प्रशिक्ष का संचालन डा. चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई, विस्तार प्रभा द्वारा किया गया तथा रामबीर सिंह, वैज्ञानिक-डी द्वा प्रशिक्षण में उपस्थित प्रतिभागियों एवं सभी सम्मानितों व धन्यवाद दिया। प्रशिक्षण 26 अक्टूबर तक चलेगा।

एफआरआई में तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण

प्रशिक्षण में 34 लोग कर रहे शिरकत

THE HIMACHAL TIMES
25 Oct., 2017

Three-day training program kicks off at FRI

DEHRADUN, OCT 24 (HTNS)

Forest Research Institute (FRI), Dehradun is organizing a 3 days specialized training from today till October 26 on "Awareness generation of technologies developed by Forest Research Institute" for Farmers, NGOs and other stakeholders from states of Uttarakhand, Uttar Pradesh and Haryana. The training is sponsored by Ministry of Environment, Forests and Climate Changes, Government of India, wherein 34 participants from various above categories of Utta-rakhand and Uttar Pradesh are participating in the training.

Dr Savita, Director, FRI, inaugurated the training programme here today. In her inaugural address, she emphasized that there was lot of scope of agro-forestry as the above states were rich in basic resources required for agro-forestry practices. She also mentioned that the technologies developed by FRI would be transferred to different stakeholders through Lab to Land process in these states. The above states, as per their specific needs, would have opportunities of employment generation and farmers will get proper price of their agro-forestry produce.

Dr AK Pandey, Head, Extension Division presented the welcome address.

While welcoming the participants and the dignitaries present, he said that the participants shall not only learn or improve their skills with subject experts but will also gain new experience in the field of agro-forestry and new technologies.

Rambir Singh, Scientist-D, Extension Division, FRI, proposed vote of thanks to all participants and other dignitaries.

The anchoring of the programme was done by Dr Charan Singh, Scientist-E, Extension Division.

Also present on the occasion were Dr Davendra Kumar, Scientist-D, PK Gupta, Scientist (Retd.), Vijay Kumar, ACF and Ajay Gulati, STO of Extension Division amongst others.

जनभारत मेल
25 अक्टूबर, 2017

एफआरआई में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरु

देहरादून, संवाददाता। वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों पर जागरूकता हेतु किसानों, स्वंय सहायता समूहों एवं अन्य हितग्राहियों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए आज की आवश्यकता है। प्रभावी रूप से कृषि वानिकी तथा वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को अपनाने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों पर जागरूकता हेतु को लेकर तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के वित्तीय सहयोग से किया जा रहा है जिसमे उत्तराखड़, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के किसान, गैर सरकारी संगठन, तथा अन्य हितग्राहियों के लगभग 34 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन डा0 सविता निदेशक वन अनुसंधान संस्थान ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि इन राज्यों में कृषि वानिकी पद्धति को स्थापित करने की काफी जरूरत है। डा0 एके.पाण्डेय, प्रमुख विस्तार प्रभाग ने अपने स्वागत भाशण में वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों पर उपरोक्त राज्यों में जागरूकता बढ़ाने हेतु जोर दिया तथा आशा व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी किसान इस प्रषिक्षण से अवश्य लाभान्वित होगे। प्रशिक्षण का संचालन डा0 चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई, विस्तार प्रभाग द्वारा किया गया तथा रामबीर सिंह, वैज्ञानिक-डी द्वारा प्रशिक्षण में उपस्थित प्रतिभागियों एवं सभी सम्मानितों को धन्यवाद दिया। प्रशिक्षण के उद्घाटन के अवसर पर डा0 देवेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक, विजय कुमार, एसीएफ. अजय गुलाटी, एसटीओ. एवं सभी प्रभाग प्रमुख, वैज्ञानिक तथा अधिकारी उपस्थित रहे।

शाह टाईम्स
25 अक्टूबर, 2017

कृषि वानकी पद्धति को स्थापित करने की जरूरत: सविता

एफआरआई में शुरू हुआ तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

उत्तराखण्ड सहित तीन राज्यों के किसान व प्रतिभागी ले रहे भाग

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों पर जागरूकता हेतु किसानों, स्वंय सहायता समूहों एवं अन्य हितग्राहियों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए आज की आवश्यकता है। प्रभावी रूप से कृषि वानिकी तथा वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को अपनाने की आवश्यकता है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रोद्योगिकियों पर जागरूकता विषय पर तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन शुरू हुआ। यह कार्यक्रम पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के वित्तीय सहयोग से किया जा रहा है जिसमें उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के किसान, गैर सरकारी संगठन, तथा अन्य हितग्राहियों के लगभग 34 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशक वन अनुसंधान संस्थान डॉ, सविता ने किया। उन्होंने कहा कि इन राज्यों में कृषि वानिकी पद्धति को स्थापित करने की काफी जरूरत है। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों को अपने प्रयोगशाला से जमीनी स्तर तक पहुंचाने की आवश्यकता है। वन अनुसंधान संस्थान में जर्द काष्ठ से पेपर बनाना तथा बांस के विभिन्न उत्पाद तैयार करना एवं इमारती लकड़ियों का वैज्ञानिक तरीके से संशोषण कर उनके स्थायित्व को बढ़ाने की विभिन्न प्रौद्योगिकियां है। उन्होनें यह भी कहा कि इस प्रशिक्षण में संस्थान के विषय विशेषज्ञों द्वारा जलवायु परिवर्तन तथा औषधीय पौधों के बारे में भी जानकारी दी जायेगी। प्रमुख विस्तार प्रभाग डॉ ए. के. पाण्डेय ने स्वागत भाषण में वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों पर इन राज्यों में जागरूकता बढ़ाने के लिए जोर दिया तथा आशा जताई कि सभी प्रतिभागी किसान इस प्रशिक्षण से अवश्य लाभान्वित होंगे। प्रशिक्षण का संचालन डॉ. चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई, विस्तार प्रभाग ने किया। इस अवसर पर रामबीर सिंह, डॉ. देवेन्द्र कुमार, विजय कुमार, ए.सी.एफ. अजय गुलाटी, एस.टी.ओ. एवं सभी प्रभाग प्रमुख, वैज्ञानिकगण उपस्थित थे।

अमर उजाला
25 अक्टूबर, 2017

एफआरआई में प्रशिक्षण शुरू

देहरादून। एफआरआई में मंगलवार से वानिकी-कृषि से जुड़ी नई तकनीक से किसान, स्वयं सहायता समूह को रूबरू कराने के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हो गया है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और हरियाणा के 34 किसान और स्वयं सहायता समूह से जुड़े लोग प्रतिभाग कर रहे हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए एफआरआई निदेशक डॉ. सविता ने कहा कि कृषि वानिकी के क्षेत्र में संभावनाएं काफी हैं। [illegible] नई तकनीकों और तरीकों को अपनाने की आवश्यकता है। तकनीक को विकसित करने में लगे संस्थानों को प्रयास करना चाहिए कि जल्द से जल्द प्रयोगशाला में किए गए शोध, अध्ययन की जानकारी लोगों तक पहुंचे। वन अनुसंधान संस्थान में नई लकड़ी से पेपर बनाना, बांस के विभिन्न उत्पाद तैयार करने आदि की दिशा में अनुसंधान कार्य किया गया है, जिसका लाभ किसानों को जानकारी और [illegible] में होगा। डॉ. एके पांडेय ने किसानों को लकड़ी के माध्यम से बनने वाली विभिन्न उत्पाद व तकनीक के बारे में जानकारी दी। इस दौरान वैज्ञानिक रणवीर सिंह, विजय कुमार, डॉ. देवेंद्र कुमार आदि मौजूद थे। ब्यूरो

NEWS VIRUS
25 Oct., 2017

कृशि वानिकी तथा वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रद्योगिकियों को अपनाने की आवष्यकता

वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रद्योगिकियों पर जागरूकता हेतु किसानों, स्वंय सहायता समूहों एवं अन्य हितग्राहियों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए आज की आवष्यकता हैं। प्रभावी रूप से कृशि वानिकी तथा वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रद्योगिकियों को अपनाने की आवष्यकता है।...

Training on "Technologies developed by Forest research Institute" concludes

DEHRADUN, OCT 26 (HTNS)

Three days training organized at FRI on creation of awareness of technologies developed by it concluded here today.

Total 35 stakeholders of different categories including farmers, NGOs, Self Help Groups and students participated and interacted with scientists of the institute on technical aspects of different technologies like, making Herbal Gulal, natural Dye from plants biomass, Seasoning of Timber, board making from Lantana weed, sustainable harvesting of medicinal plants, seed and nursery technology, Samridhi- a process for obtaining photoecdy-steroids from weeds for Silkworm, composting from waste plant biomass, cultivation of medicinal and edible mushrooms, agroforestry modelling and many others.

Dr A K Pandey, Head Extension Division, delivered welcome address and said that any help required by any participant would possibly be done by the team of Extension Division. He also thanked the team for working hard and making training successful. Director, FRI, Dr Savita in her address said that the institute was already in service of common people and anybody can interact with the team through Vaniki Sahayata Kendra and get solution for forestry related problems.

Participants appreciated the training very much and said that more such programmes should be organized by the institute from time to time. They said that they would maintain regular interaction and take technical guidance of scientists of the institute in adoption of technologies disseminated to them.

The hosting of the programme was done by Dr Charan Singh, Scientist and vote of thanks was proposed by Dr Devendra Kumar, Scientist. All members of the team including Rambir Singh, Scientist, Ajay Gulati Senior Technical Officer, P K Gupta, Scientist (Rtd.), Vijay Kumar, ACF, Ramesh Singh Head Clerk and Sachin, Forest Guard were present on the closing ceremony.

विकास का एकीकृत हिस्सा बन सकती है तकनीकियां

देहरादून 26अक्टूबर (**दर्पण संवाददाता**)। वानिकी क्षेत्र में विकसित तकनीकियां राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे विकास का एक एकीकृत हिस्सा बन सकती हैं यदि इनको सुचारू रूप से एक सामान्य व्यक्ति तक पहुँचाया जाए साथ ही ये मेक इन इण्डिया और स्किल डवलपमेन्ट को साकार करने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वन अनुसंधान संस्थान द्वारा वानिकी क्षेत्र में अनेक उपयोगी तकनीकियां विकसित की गई हैं, जो कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में रह रहे लघु उद्यमियों के लिए मददगार साबित हो सकती है। यदि उनको उन तक स्पष्ट एवं सरल भाषा में पहुँचाया जाए। इसके मद्येनजर संस्थान में तंक संस्थान द्वारा विकसित तकनीकियों की जानकारी देने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न श्रेणियों के 35 हितग्राहियों ने भाग लिया। इनमें उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें गैर सरकारी संगठन, स्वयं सहायता समूह और विद्यार्थी आदि शामिल थे। इस प्रशिक्षण में संस्थान द्वारा विकसित अनेक तकनीकियों जिनमें हर्बल गुलाल, बालों के प्राकृतिक रंजक, काष्ठ शुष्कन और लेन्टाना से बोर्ड निर्माण, औषधीय पौधों का वैज्ञानिक और हानिरहित कटान, बीज एवं पौधशाला निर्माण तकनीक, समृद्धि–रेशम कीट के लिए भोजन, कम्पोस्ट निर्माण, औषधीय एवं खाद्य मसरूम की खेती, कृषि वानिकी प्रारूपों का निर्माण आदि शामिल हैं पर तकनीकी जानकारी प्रदान की गई ।

इस अवसर पर प्रशिक्षण प्रोग्राम 26 अक्टूबर, 2017 को विस्तार प्रभाग के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुआ। इस सम्पन्न समारोह में डा0 ए.के. पाण्डेय, प्रभाग प्रमुख, विस्तार ने सभी का स्वागत किया और आवश्वासन दिया कि विस्तार प्रभाग की टीम उनको हर सम्भव जानकारी देने के लिए तत्पर रहेगी। उन्होंने विस्तार की टीम को प्रशिक्षण को सफल बनाने के लिए धन्यवाद भी दिया। इस मौके पर संस्थान की निदेशक डा0 सविता ने कहा कि संस्थान हमेशा एक आम आदमी की सहायता के लिए तत्पर रहता है। कोई भी व्यक्ति जो कि वानिकी कार्य से संबंध रखता है वह कभी भी संस्थान से सम्पर्क कर सकता है। इसके लिए संस्थान में एक वानिकी सहायता केन्द्र संचालित है जहां पर वह अपनी समस्या को दर्ज करा सकते हैं जिसका समाधान किसी भी माध्यम से उसके पास भेज दिया जाएगा। समापन सत्र का संचालन डा0 चरण सिंह, वैज्ञानिक–ई ने किया। इस अवसर पर डा0 देवेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक–डी ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद अदा किया। इस अवसर पर विस्तार प्रभाग की टीम के सभी सदस्य- रामबीर सिंह, वैज्ञानिक, अजय गुलाटी, वरिष्ट अधिकारी, पी. के. गुप्ता, सेवा निवृत्त वैज्ञानिक, विजय कुमार, एसीएफ, श्री रमेश सिंह, लिपिक, श्री सचिन, वन रक्षक आदि मौजूद रहे।

आम आदमी तक पहुंचे वानिकी क्षेत्र की तकनीकियां

वन अनुसंधान संस्थान कर रहा आम आदमी की सेवा: डा. सविता

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान की निदेशक डा. सविता ने कहा कि संस्थान हमेशा एक आम आदमी की सहायता के लिए तत्पर रहता है। कोई भी व्यक्ति जो कि वानिकी कार्य से संबंध रखता है वह कभी भी संस्थान से सम्पर्क कर सकता है। इसके लिए संस्थान में एक वानिकी सहायता केन्द्र संचालित है जहां पर वह अपनी समस्या को दर्ज करा सकते हैं जिसका समाधान किसी भी माध्यम से उसके पास भेज दिया जाएगा।

वानिकी क्षेत्र में विकसित तकनीकियां राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे विकास का एक एकीकृत हिस्सा बन सकती हैं यदि इनको सुचारू रूप से एक सामान्य व्यक्ति तक पहुँचाया जाए। मेक इन

इण्डिया और स्किल डवलपमेन्ट को साकार करने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वन अनुसंधान संस्थान द्वारा वानिकी क्षेत्र में अनेक उपयोगी तकनीकियां विकसित की गई हैं। जो कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में रह रहे लघु उद्यमियों के लिए मददगार साबित हो सकती है। यदि उनको उन तक स्पष्ट एवं सरल भाषा में पहुँचाया जाए। इसके मद्येनजर संस्थान में 24 से 26 अक्टूबर तक संस्थान द्वारा विकसित तकनीकियों की जानकारी देने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न श्रेणियों के 35 लोगों ने भाग लिया। इनमें उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के प्रतिभागी शामिल हुए। इस प्रशिक्षण में संस्थान द्वारा विकसित अनेक तकनीकियों जिनमें हर्बल गुलाल, बालों के प्राकृतिक रंजक, काष्ठ शुष्कन और लेन्टाना से बोर्ड निर्माण, औषधीय पौधों का वैज्ञानिक और हानिरहित कटान, बीज एवं पौधशाला निर्माण तकनीक, समृद्धि-रेशम कीट के लिए भोजन, कम्पोस्ट निर्माण, औषधीय एवं खाद्य मसरूम की खेती, कृषि वानिकी प्रारूपों का निर्माण पर तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। इस समापन समारोह में प्रभाग प्रमुख, विस्तार डा. एके पाण्डेय ने सभी का स्वागत किया और आश्वासन दिया कि विस्तार प्रभाग की टीम उनको हर सम्भव जानकारी देने के लिए तत्पर रहेगी। उन्होंने विस्तार की टीम को प्रशिक्षण को सफल बनाने के लिए धन्यवाद भी दिया। समापन सत्र का संचालन डा. चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई ने किया। इस अवसर पर डा. देवेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक-डी ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद अदा किया। इस अवसर पर विस्तार प्रभाग की टीम के सभी सदस्य रामबीर सिंह, अजय गुलाटी, पी.के. गुप्ता, विजय कुमार, एसीएफ, रमेश सिंह, सचिन आदि मौजूद रहे।

एफआरआई में कार्यशाला संपन्न

देहरादून (ब्यूरो)। एफआरआई में कृषि-वानिकी पर चल रही कार्यशाला गुरुवार को संपन्न हो गई। कार्यशाला में उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के किसान और स्वयं सहायता समूह से जुड़े 35 लोगों ने प्रतिभाग किया। प्रतिभागियों को हर्बल गुलाल, बालों के लिए प्राकृतिक रंग, लेंटाना से बोर्ड निर्माण, मशरूम की खेती आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। निदेशक डॉ.सविता ने कहा कि संस्थान किसान समेत अन्य लोगों की मदद के लिए तैयार है, वह संस्थान से प्रशिक्षण लेकर स्वरोजगार भी शुरू कर सकते हैं। डॉ.एके पांडेय, डॉ.चरण सिंह, रामबीर सिंह, अजय गुलाटी, पीके गुप्ता समेत संस्थान से जुड़े कई अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।